प्रादर्श प्रश्न पत्र 2011

विषय – हिन्दी विशिष्ट

कक्षा – बारहवीं

समय– 3 घंटे **पूर्णांक– 100**

निर्देश–

1. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।
2. प्रश्न क्र. 1 से 5 तक वस्तुनिष्ठ प्रश्न दिए है। प्रत्येक प्रश्न के लिए $1 \times 5 \times 5 = 25$ अंक निर्धारित है।
3. प्रश्न क्र. 6 से 10 तक प्रत्येक के उत्तर लगभग 50 से 75 शब्दों में लिखिए। प्रत्येक प्रश्न हेतु 4 अंक निर्धारित है।
4. प्रश्न क्र. 11 से 19 तक प्रत्येक के उत्तर 100 से 120 शब्दों में लिखिए। प्रत्येक प्रश्न हेतु 5 अंक निर्धारित है।
5. प्रश्न क्र. 20 का उत्तर लगभग 250/300 शब्दों में लिखिए। इसके लिए 10 अंक निर्धारित है।

प्रश्न 1. निम्नलिखित रिक्त स्थानों की पूर्ति दिये गये विकल्पों में से उचित शब्द का चयन कर कीजिए।

1. श्रीकृष्ण के प्रति.....का दाम्पत्य भाव है।
   (रसखान/मीरा)
2. शरद जोशी प्रसिद्ध.....है।
   (कहानीकार/व्यंग्यकार)
3. गणेश शंकर विद्यार्थी ने.....नामक हिन्दी साप्ताहिक पत्र प्रारंभ किया।
   (प्रताप/आजाद)
4. राजकीय कामकाज में प्रयोग की जाने वाली भाषा.....कहलाती है।

(राष्ट्रभाषा / राजभाषा)

5. ''रसात्मकं वाक्यं काव्यम्'' यह परिभाषा.....ने दी है।

(आचार्य रामचन्द्र शुक्ल / आचार्य विश्वनाथ)

प्रश्न 2. निम्नलिखित कथनों के लिये सही विकल्प चुनिए –

(1) कबीर की भाषा है –

(अ) ब्रज भाषा (ब) बुन्देलखण्डी भाषा

(स) साधुक्ड़ी भाषा (द) परिष्कृत भाषा

(2) डॉ. रामकुमार वर्मा ने बचपन में नाटकों में किस पात्र का अभिनय सर्वाधिक किया –

(अ) श्रीराम (ब) श्रीकृष्ण

(स) शिवाजी (द) सूर्याजी

(3) 'मुंह में राम बगल में छुरी' का अर्थ है –

(अ) कठोर स्वभाव (ब) कपटपूर्ण व्यवहार

(स) झूठा दिखावा (द) प्रचार करना

(4) गद्य–पद्य मिश्रित रचना को कहते है –

(अ) गीति नाट्य (ब) चम्पू काव्य

(स) मुक्तक काव्य (द) प्रबंध काव्य

(5) तात्या को पकड़ने के पीछे मीड की कितनी सेनायें लगी थी –

(अ) सात (ब) दस

(स) पांच (द) तीन

प्रश्न 3. निम्नलिखित कथनों में सत्य / असत्य छांटिए –

1. ग्वाले ने गुड़ में लपेटकर सुई गौरा को खिला दी।
2. केशवदास भक्तिकाल के प्रमुख कवि है।
3. सुर्रो रानी मिट्टी से भाड़ बना रही थी?

4. कवित्त छन्द के प्रत्येक चरण में 31 वर्ण होते है।

5. रचना की दृष्टि से वाक्य तीन प्रकार के होते है।

प्रश्न 4. स्तीा 'क' के लिए स्तंभ 'ख' से चुनकर सही जोड़ी बनाइए –

	क	–	**ख**
(1)	कठिन काव्य का प्रेत कहा जाता है	–	सोम ठाकुर
(2)	वापसी कहानी के कहानीकार	–	जयशंकर प्रसाद
(3)	तन हुए शहर के	–	केशवदास
(4)	सार्थक शब्दों का समूह होता है	–	उषा प्रियवदा
(5)	कामायनी	–	वाक्य
		–	काव्य
		–	बिहारी

प्रश्न 5. निम्नलिखित प्रश्नों के एक वाक्य में उत्तर दीजिए :–

1. कबीरदास जी ने किसकी संगति को अच्छा बताया है?
2. गजाधर बाबू किस विभाग में नौकरी करते थे?
3. देवकी कहां बंद थी?
4. वह विद्वान महिला है, का शुद्ध वाक्य क्या होगा?
5. जहां एक शब्द एक से अधिक बार आये और उनके अर्थ भिन्न हो तो कौन सा अलंकार होगा?

प्रश्न 6. भाई बहन कविता के माध्यम से कवि क्या संदेश देना चाहते हैं?

अथवा

राम को पार उतारने के लिए केवट कौन सी शर्त रखता है और क्यों?

प्रश्न 7. कबीर ने शब्द की क्या महिमा बतलाई है?

अथवा

उद्धव के ब्रज आगमन की गोपियों पर क्या प्रतिक्रिया हुई?

प्रश्न 8. छायावादी कविता की चार विशेषताएं लिखिए?

अथवा

प्रगतिवादी काव्यधारा की चार विशेषताएं लिखिए?

प्रश्न 9. गौतम बुद्ध को तपस्विनी यशोधरा के आगे क्यों झुकना पड़ा?

अथवा

जीवन में भीरूता किन–किन स्थितियों में दिखाई देती है?

प्रश्न 10. संस्मरण और रेखाचित्र में कोई चार अंतर स्पष्ट कीजिए?

अथवा

नाटक और एकांकी में चार अंतर बताइये?

प्रश्न 11. माँ ने रामकुमार वर्मा को पढ़ाई के संबंध में क्या निर्देश दिए थे?

अथवा

नैनो टेक्नोलॉजी क्या है? इसके क्षेत्र विस्तार के बारे में संभावनाएं बताइये?

प्रश्न 12. विभावना अलंकार की परिभाषा लिखते हुए उदाहरण लिखिए?

अथवा

छप्पय छन्द की परिभाषा उदाहरण सहित लिखिए?

प्रश्न 13. (अ) निम्नलिखित मुहावरों का अर्थ लिखते हुए सार्थक वाक्य बनाइये –

(1) अपने पैर पर कुल्हाड़ी मारना।

(2) आंखों पर पट्टी बांधना।

(ब) भाषा और बोली में कोई तीन अंतर लिखिए।

अथवा

(अ) निम्नलिखित वाक्यों को निर्देशानुसार बदलिए –

(1) जो व्यक्ति परिश्रमी होता है उसकी सभी प्रशंसा करते है– (साधारण वाक्य)

(2) मेरे जीवन का उद्देश्य समाज सेवा है– (मिश्र वाक्य)

(ब) राष्ट्र भाषा किसे कहते है? राष्ट्र भाषा की दो विशेषताएं लिखिए।

प्रश्न 14. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल अथवा जैनेन्द्र कुमार का साहित्यिक परिचय निम्नलिखित बिन्दुओं के आधार पर दीजिए।

(1) चार रचनाएं (2) भाषा (3) शैली (4) साहित्य में स्थान।

प्रश्न 15. सूरदास अथवा सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' का साहित्यिक परिचय निम्नलिखित बिन्दुओं के आधार पर दीजिए।

(1) दो रचनाएं (2) भाव पक्ष (3) कलापक्ष (4) साहित्य में स्थान।

प्रश्न 16. निम्नांकित गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए –

असल प्रकाश तो हमारे जीवन में छिपा हुआ है– सृजन का प्रकाश, आदमी का आचरण, आदमी का शील, आदमी का श्रम, आदमी का विवेक और आदमी की भावना जिसे छू लें वह प्रकाशित हो जाए। बड़े–बड़े अंधेरों को तराशकर ये प्रकाश निर्झर बहा दें। जवारों जैसे पीताभ गेहूं के पौधे क्या यह संदेश नहीं देते कि सृजन की यात्रा कभी रूकती नहीं? उसे अंधेरे बंद कमरों में भी नहीं रोका जा सकता।

अथवा

यह संसार क्षणभंगुर है। इसमें दुःख क्या और सुख क्या है? जो जिसने बनाया है वह उसी में लय हो जाता है। इसमें शोक और उद्वेग की क्या बात है? यह संसार जल का बुदबुदा है, फूटकर किसी रोज जल में ही मिल जायेगा। फूट जाने में ही बुदबुदे की सार्थकता है। जो यह नहीं समझते वे दया के पात्र है।

प्रश्न 17. निम्नांकित पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए।

बाल्हा मैं बैरागिण हूंगी हो।
जो–जो भेष म्हांरो साहिब रीझै, सोइ–सोइ भेष धरूंगी, हो।
सील संतोष धरू घट भीतर, समता पकड़ रहूंगी, हो।
जाको नाम निरंजण कहिए, ताको ध्यान धरूंगी, हो।
गुरू, ज्ञान रंगू, तन कपड़ा, मन मुद्रा पेरूंगी, हो।
प्रेम प्रीत सूं हरि गुण गाऊं, चरणन लिपट रहूंगी, हो।
यातन की मैं करूं कीगरी, रसना राम रटूंगी, हो।
मीरा कहे प्रभु गिरधर नागर, साधां संग रहूंगी, हो।

अथवा

देश की स्वाधीनता पर आंच तुम आने न देना।
तुम न समझो, देश की स्वाधीनता यों ही मिली है,
हर कली इस बाग की, कुछ खून पीकर ही खिली है।
मस्त सौरभ, रूप या जो रंग फूलों को मिला है,
यह शहीदों के उबलते खून का ही सिलसिला है।
बिछ गये वे नींव में, दीवार के नीचे गड़े हैं,
महल अपने, शहीदों की छातियों पर ही खड़े हैं।
नींव के पत्थर तुम्हें सौगन्ध अपनी दे रहे हैं,
जो धरोहर दी तुम्हें, वह हाथ से जाने न देना।

प्रश्न 18. निम्नांकित अपठित गद्यांश को पढ़कर नीचे दिये गये प्रश्नों के उत्तर लिखिये।

नारी सृष्टि का आधार है। नारी के बिना संसार की हर रचना अपूर्ण तथा रंगहीन है। वह मृदु होते हुए भी कठोर है, उसमें पृथ्वी जैसी सहनशील, सूर्य जैसा ओज तथा सागर जैसा गाम्भीर्य एक साथ दृष्टिगोचर होता है। नारी के अनेक रूप है, वह समाज कभी उन्नति नहीं कर सकता जहां नारी को सम्मान की दृष्टि से नहीं देखा जाता नर और नारी गृहस्थी रूपी गाड़ी के दो पहिए है। इन दोनों के तालमेल से ही गृहस्थी का रथ सुचारू रूप से गतिमान रहता है।

प्रश्न 1. उपर्युक्त गद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए।

प्रश्न 2. उपर्युक्त गद्यांश का सारांश लिखिए।

प्रश्न 3. सृष्टि का आधार किसे कहा गया है?

प्रश्न 19. परीक्षा अवधि में ध्वनि विस्तारक यंत्रों पर प्रतिबंध लगाने हेतु जिलाधीश को शिकायती पत्र लिखिए।

अथवा

सचिव, माध्यमिक शिक्षा मण्डल, भोपाल का अंकसूची की द्वितीय प्रति मंगाने हेतु आवेदन पत्र लिखिए।

प्रश्न 21. निम्नांकित में से किसी एक विषय पर लगभग 250 से 300 शब्दों में निबंध लिखिए।

1. भ्रष्टाचारः राष्ट्र के विकास में बाधा।
2. पर्यावरणः संरक्षण व वृक्षारोपण।
3. इन्टरनेटः आज के जीवन की आवश्यकता।
4. वर्तमान जीवन शैली और योग का महत्व।
5. परहित सरिस धर्म नहिं भाई।

– – – – – –

आदर्श उत्तर
विषय – हिन्दी विशिष्ट
कक्षा – बारहवीं

वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के उत्तर –

उत्तर 1. रिक्त स्थान की पूर्ति –

1. मीरा।
2. व्यंग्यकार।
3. प्रताप।
4. राजभाषा।
5. आचार्य विश्वनाथ।

प्रत्येक सही उत्तर लिखिने पर 1 अंक कुल 5 अंक प्राप्त होंगे।

उत्तर 2. सही विकल्प का चयन –

(1) सधुक्कड़ी भाषा।

(2) श्रीकृष्ण।

(3) कपटपूर्ण व्यवहार।

(4) चम्पू काव्य।

(5) सात।

प्रत्येक सही उत्तर लिखिने पर 1 अंक कुल 5 अंक प्राप्त होंगे।

उत्तर 3. सत्य/असत्य छांटिये –

(1) सत्य।

(2) असत्य।

(3) असत्य।

(4) सत्य।

(5) सत्य।

प्रत्येक सही उत्तर लिखिने पर 1 अंक कुल 5 अंक प्राप्त होंगे।

उत्तर 4. सही जोडियां बनाइये–

	क	–	ख
(1)	कठिन काव्य का प्रेत कहा जाता है	–	केशवदास
(2)	वापसी कहानी के कहानीकार	–	उषा प्रियंवदा
(3)	तन हुए शहर के	–	सोम ठाकुर
(4)	सार्थक शब्दों का समूह होता है	–	वाक्य
(5)	कामायनी	–	जयशंकर प्रसाद

प्रत्येक सही उत्तर लिखिने पर 1 अंक कुल 5 अंक प्राप्त होंगे।

उत्तर 5. एक वाक्य में उत्तर दीजिए –

1. कबीरदास ने साधु की संगति को अच्छा बताया है।
2. गजाधर बाबू रेलवे विभाग में नौकरी करते थे।
3. देवकी अपने भाई कंस के कारागार में बंद थी।
4. वह विद्वान महिला का शुद्ध वाक्य वह विदुषी महिला है।
5. एक शब्द एक से अधिक बार आये और उसके अर्थ भिन्न हो तो यमक अलंकार होगा।

प्रत्येक सही उत्तर लिखिने पर 1 अंक कुल 5 अंक प्राप्त होंगे।

उत्तर 6. भाई–बहन कविता के माध्यम से कवि ने मानव जीवन की अनुभूतियों को प्रभावी रूप से अभिव्यक्त किया है। उन्होंने अपनी कविता में अनेक प्रतीकों के माध्यम से भाई–बहन के प्रेम को व्यक्त करने का प्रयत्न किया है। वे मानते है कि भाई की क्रियाशीलता तथा बहन की विवेकशीलता मिलकर ही देश की उन्नति कर सकती है। उन्होंने अपनी कविता के माध्यम से इन्हीं मानवीय प्रेम भावों को मातृभूमि के प्रेम से जोड़कर उदात्त मानवता का संदेश दिया।

उपरोक्तानुसार लिखने पर कुल 4 अंक प्राप्त होंगे।

अथवा

श्रीराम को गंगा पार उतारने के लिए केवट यह शर्त रखता है कि श्रीराम के चरणों को धोकर ही वह उन्हें अपनी नाव पर चढ़ाएगा, क्योंकि उनके चरणों के स्पर्श से पत्थर भी नारी बन जाती है। यदि वे उसकी नाव को स्पर्श करेंगे तो नाव नष्ट हो जायेगी या दूसरी स्त्री बन जाएगी। फिर वह अपने परिवार का पालन कैसे करेगा?

उपरोक्तानुसार उत्तर लिखने पर पूर्ण 4 अंक प्राप्त होंगे।

उत्तर 7. कबीर ने शब्द की बड़ी ही महिमा बताई है और कहा है कि शब्द को सावधानी पूर्वक अपने मुंह से निकालना चाहिए। वैसे तो शब्द के कोई हाथ पांव नहीं होते लेकिन ये एक ओर औषधि का काम करता है तो दूसरी ओर असावधानी से बोला गया शब्द शरीर को घाव दे देता है। अतः शब्द की अत्यंत अमूल्य महिमा है।

उपरोक्तानुसार उत्तर लिखने पर पूर्ण 4 अंक प्राप्त होंगे।

अथवा

कृष्ण के सखा उद्धव के ब्रज आगमन का समाचार गोपियों ने सुना तो वे झुण्ड के झुण्ड बनाकर नन्द बाबा के द्वार पर एकत्रित होने लगीं। अपने कमल से कोमल पैरों के पंजों से ऊचक–ऊचक कर पत्र को देखने लगीं और अपने ह्रदय से लगाने लगीं। सभी एक दूसरे से कहने लगी कि हमकों श्रीकृष्ण ने क्या लिखा है। श्रीकृष्ण के विरह में व्यथित सभी गोपियों की हालत ऐसी है कि वे दुख की पराकाष्टा पर पहुंच गई है।

उपरोक्तानुसार उत्तर लिखने पर पूर्ण 4 अंक प्राप्त होंगे।

उत्तर 8. **छायावाद की विशेषताएं :–**

1. **प्रकृति का मानवीकरण :–** प्रकृति पर मानवीय भावनाओं का आरोप छायावादी कविता की प्रमुख विशेषता है। कवियों ने प्रायः प्रकृति का नारी रूप में चित्रण किया है।
2. **करूणा एवं वेदना का स्वर :–** छायावादी कविता में करूणा एवं वेदना की अभिव्यक्ति अधिक हुई है। इसलिए इस काव्य में कहीं–कहीं निराशा के स्वर भी मिलते हैं।
3. **कल्पना की प्रधानता :–** छायावादी कवियों ने यथार्थ का चित्रण नहीं किया अपितु कल्पना प्रधान रचनाएं अधिक लिखी है।
4. **रहस्यवादिता :–** छायावादी कविता में अलौकिक प्रेम का चित्रण करते हुए विराट सत्ता के प्रति जिज्ञासा का वर्णन किया है।

उपरोक्तानुसार विशेषताएं लिखने पर पूर्ण 4 अंक प्राप्त होंगे।

अथवा

प्रगतिवाद की विशेषताएं :–

1. **शोषकों के प्रति घृणा और शोषितों के प्रति करूणा :–** पूंजीवादी व्यवस्था शोषण को जन्म देती है, सामाजिक विषमता उत्पन्न करती है इसलिए कवियों ने शोषकों के प्रति घृणा की भावना व्यक्त की है।
2. **यथार्थ चित्रण :–** प्रगतिवादी कवि कल्पना के स्थान पर यथार्थ को महत्व देते हैं। यथार्थ का चित्रण करना उनका प्रमुख ध्येय रहा है।
3. **नारी मुक्ति का स्वर :–** प्रगतिवादी कवियों ने युग–युग से प्रताड़ित, शोषित नारी को पुरूष प्रधान समाज में प्रतिष्ठित करने का प्रयास किया।
4. **रूढ़िवाद का विरोध :–** प्रगतिवादी कवि रूढ़िवाद के कट्टर विरोधी है। प्रगतिवादी कवि आत्मा, परमात्मा, स्वर्ग–नर्क के अस्तित्व पर विश्वास नहीं करते।

उपरोक्तानुसार विशेषताएं लिखने पर पूर्ण 4 अंक प्राप्त होंगे।

उत्तर 9. यशोधरा भारतीय नारी है। वह अपने पति की राह में बाधा कभी नहीं बन सकती थी, किंतु बुद्ध (गौतम) को ऐसा लगा कि वह उसके मार्ग में रोड़ा उत्पन्न कर सकती है, इसलिए रात्रि में उसे और पुत्र राहुल को सोता छोड़, सत्य की खोज मं निकल पड़े। लेकिन आज वह भिक्षुक के वेश में द्वारा पर खड़ा है। इधर यशोधरा जो कि अपने पति के लिए सर्वस्व न्यौछावर कर चुकी है, प्रियतम के वियोग में संसार को भूल चुकी है, तपस्विनी बन चुकी है, उसे केवल इस बात का मलाल है कि वे (गौतम) उससे कह कर जाते। आज गौतम बुद्ध उससे चिर वियोग का दान मांग रहा है, और यशोधरा विश्व कल्याण के लिए वह दान उदारतापूर्वक दे रही है। गौतम बुद्ध भारतीय नारी के इस उदात्त चरित्र और असाधारण दानशीलता के समक्ष नतमस्तक हो जाते है।

उपरोक्तानुसार उत्तर लिखने पर पूर्ण 4 अंक प्राप्त होंगे।

अथवा

भय जब स्वभावगत हो जाता है तब कायरता या भीरूता कहलाता है। पुरूषों में यह एक महान दोष माना जाता है। किसी पुरूष को कायर कहना उसके पुरूषत्व को चुनौती देना है। स्त्रियों की भीरूता मनोरंजन का साधन होती है। व्यापारी अर्थ हानि के भय से भीरू रहता है। पंडित शास्त्रार्थ के भय से मुंह चुराता है। धर्म भीरूता को अच्छा माना जाता है। रामचन्द्र शुक्ल की दृष्टि में धर्म भीरूता भी अच्छी प्रवृत्ति का परिचायक नहीं है। धर्म भीरूता की अपेक्षा धर्म की ओर आकृष्ट होने वाले लोग हैं।

उपरोक्तानुसार उत्तर लिखने पर पूर्ण 4 अंक प्राप्त होंगे।

उत्तर 10. **संस्मरण और रेखाचित्र में अंतर :–**

क्र.	संस्मरण	रेखाचित्र
1	संस्मरण लेखक के स्मृति पटल पर अंकित किसी विशिष्ट व्यक्ति के जीवन की घटनाओं का विवरण है।	रेखाचित्र किसी वस्तु या पात्र का आकर्षक ढंग से चित्रात्मक वर्णन है।
2	संस्मरण वास्तविक होता है।	रेखाचित्र काल्पनिक भी हो सकता है।
3	संस्मरण संक्षिप्त होता है।	रेखाचित्र विस्तृत होता है।
4	संस्मरण किसी महापुरूष या विशिष्ट घटना से संबंधित होता है।	रेखाचित्र किसी भी साधारण विषय पर लिखा जा सकता है।

छात्र उपरोक्त अन्तरों के अतिरिक्त अन्य अन्तर भी लिख सकते है एक अंतर पर 1 अंक कुल 4 अंक।

अथवा

एकांकी और नाटक में अंतर :–

क्र.	एकांकी	नाटक
1	एकांकी में एक ही अंक होता है।	नाटक में अनेक अंक होते है।
2	एकांकी में एक ही मुख्य कथा होती है।	नाटक में मुख्य कथा के साथ प्रासंगिक कथा भी होती है।
3	एकांकी का एक ही उद्देश्य होता है।	नाटक में कई उद्देश्य हो सकते है।
4	एकांकी में पात्रों की संख्या सीमित होती है।	नाटक में पात्रों की संख्या अधिक होती है।

छात्र उपरोक्त अन्तरों के अतिरिक्त अन्य अन्तर भी लिख सकते है एक अंतर पर 1 अंक कुल 4 अंक।

उत्तर 11. डॉ. रामकुमार वर्मा की माँ एक सुशिक्षित एवं सुसंस्कृत महिला थी। वे अपने बच्चों में भी शिक्षा के उच्च संस्कार प्रदान करना चाहती थी। यह उन्हीं के मार्गदर्शन और सीख का फल था कि डॉ. रामकुमार वर्मा कभी अनुत्तीर्ण नहीं हुए, बल्कि वे सदैव ''डिवीजन'' में उत्तीर्ण होते रहे। पढ़ाई के संबंध में उनकी माँ ने उनसे कहा था कि पढ़ाई में उन्हें पहले दर्जे का ध्यान रखना है अपने लक्ष्य के प्रति उसी एकाग्रता और समर्पण के साथ उन्हें सदैव प्रयत्नशील रहना चाहिए जिस प्रकार महाभारत काल में अर्जुन ने चिड़िया की केवल आंख पर अपना ध्यान रखा था।

(5 अंक)

उपरोक्तानुसार उत्तर लिखने पर पूर्ण 5 अंक प्राप्त होंगे।

अथवा

'नैनो टेक्नोलॉजी' एक अति सूक्ष्म दुनिया है जिसका दायरा एक मीटर के अरबवें हिस्से अथवा उससे भी छोटा है। वास्तव में नैनो शब्द की उत्पत्ति ग्रीक भाषा के शब्द 'नैनों' से हुई है जिसका अर्थ है सूक्ष्म या बौना। यह नाम जापानी वैज्ञानिक नौरिया तानीगूगूची ने सन् 1976 में दिया। यह टेक्नोलॉजी जितनी अधिक सूक्ष्म है उतनी ही विशाल संभावनाएं अपने आप में समेटे हुए है। वर्तमान में नैनो टेक्नोलॉजी चिकित्सा के क्षेत्र से लेकर उद्योगों तक में अपनी उपयोगिता सिद्ध कर रही है। यद्यपि भारतीय बाजारों में नैनो उत्पादों की संख्या अत्यंत कम है मगर वह दिन दूर नहीं जब भारत में भी नैनो टेक्नोलॉजी जनित उत्पादों का बोलबाला होगा।

वर्तमान में भारतीय विशेषज्ञ भी इस क्षेत्र में शोध कर रहे है इससे स्पष्ट है कि भविष्य में नैनो टेक्नोलॉजी के क्षेत्र में विस्तार की असीम संभावनाएं है।

उपरोक्तानुसार उत्तर लिखने पर पूर्ण 5 अंक प्राप्त होंगे।

उत्तर 12. विभावना अलंकार की परिभाषा – जहां कारण के बिना अथवा कारण के विपरीत कार्य का होना बताया जाए वहां विभावना अलंकार होता है।

उदाहरण :– बिनु पद चलै, सुनै बिनु काना,
कर बिनु कर्म, करे विधि नाना।
आनन रहित सकल रस भोगी,
बिनु बानी वक्ता बड़ जोगी।।

उपरोक्तानुसार उत्तर लिखने पर पूर्ण 5 अंक प्राप्त होंगे।

अथवा

छप्पय छन्द विषम मात्रिक और संयुक्त छन्द है। इसमें छः चरण होते है प्रथम चार चरण रोला के जिसमें 11, 13 मात्राएं तथा दो चरण उल्लाला के जिसमें 15, 13 मात्राएं होती है।

उदाहरण :– जहां स्वतंत्र विचार न बदले मन में मुख में,
जहां न बाधक बनें सबल निबलों के सुख में
सबको जहां समान निजोन्नति का अवसर हो
शांतिदायिनी निशा, हर्ष सूचक वासर हो
सब भांति सुशासित हों जहां, समता के सुखकर नियम।
बस उसी स्वशासित देश में जागें हे जगदीश हम।।

उपरोक्तानुसार उत्तर लिखने पर पूर्ण 5 अंक प्राप्त होंगे।

उत्तर 13. (अ) मुहावरों का अर्थ :–

1. अपने पैर पर कुल्हाड़ी मारना – स्वयं की हानि करना।
   वाक्य– मोहन पढ़ाई छोड़कर अपने गांव चला गया और घर में बेकार बैठ गया उसने स्वयं अपने पैर पर कुल्हाड़ी मार ली।
2. आंखों पर पट्टी बांधना – अनजान बनना।

वाक्य– बेटा परीक्षा के समय पढ़ाई की बजाय टेलीविजन देखता रहता है ओर उसकी माँ आंखों पर पट्टी बांधकर बैठी रहती है।

(ब) भाषा और बोली में अंतर –

क्र.	भाषा	बोली
1	भाषा का क्षेत्र व्यापक होता है।	बोली का क्षेत्र सीमित होता है।
2	भाषा में साहित्यिक रचनाएं लिखी जाती है।	बोली में लिखित साहित्य नहीं पाया जाता है।
3	भाषा का प्रयोग राजकीय कार्यों में किया जाता है।	बोली का प्रयोग राजकीय कार्यों में नहीं किया जाता है।

उपरोक्तानुसार उत्तर लिखने पर पूर्ण 5 अंक प्राप्त होंगे।

अथवा

(अ) निर्देशानुसार वाक्य परिवर्तन –

1. परिश्रमी व्यक्ति की सभी प्रशंसा करते हैं।
2. मेरे जीवन का उद्देश्य यह है कि मैं समाज सेवा करूं।

(ब) **राष्ट्र भाषा की परिभाषा :–** संविधान द्वारा मान्यता प्राप्त तथा बहुसंख्यक लोगों के द्वारा प्रयोग की जाने वाली भाषा को राष्ट्र भाषा कहते हैं।

विशेषताए :–

1. राष्ट्र भाषा राष्ट्र की संपर्क भाषा होती है और जन जीवन को प्रभावित करतीहै।
2. राष्ट्र भाषा शिक्षा प्रशासन तथा साहित्य की भाषा होती है।
3. राष्ट्र भाषा को राजनैतिक संरक्षण प्राप्त होता है।
4. राष्ट्र भाषा लिपि वैज्ञानिक होती है।

उपरोक्तानुसार उत्तर लिखने पर पूर्ण 5 अंक प्राप्त होंगे।

उत्तर 14. लेखक परिचय – आचार्य रामचन्द्र शुक्ल

1. **रचनाएं** :– हिन्दी साहित्य का इतिहास, हिन्दी काव्य में रहस्यवाद, रस मीमांस, चिन्तामणि, बुद्ध चरित।
2. **भाषा** :– साहित्यिक दृष्टि से आचार्य रामचन्द्र शुक्ल की भाषा अत्यंत परिष्कृत एवं संस्कृतनिष्ठ है। उर्दू, फारसी के शब्दों का स्वाभाविक प्रयोग हुआ है। मुहावरों, लोकोक्तियों के प्रयोग आपकी अभिव्यक्ति को और अधिक प्रभावी बना देते है।
3. **शैली** :– शुक्ल जी अपनी शैली के स्वयं निर्माता है। उनकी शैली समास से प्रारंभ होकर व्यास शैली के रूप में समाप्त होती है। मुख्य रूप से आपने समीक्षात्मक, गवेषणात्मक, भावात्मक व व्यंग्य प्रधान शैली का प्रयोग किया है।
4. **साहित्य में स्थान** :– आचार्य शुक्ल युग प्रवर्तक निबंधकार के रूप में सदैव स्मरणीय रहेंगे। उन्होंने हिन्दी साहित्य का इतिहास लिखकर अमरत्व प्राप्त किया है। मनोवैज्ञानिक विषयों पर लिखे गए उनके निबंध साहित्य की अमूल्य धरोहर हैं।

(2+1+1+1=5 अंक)

अथवा

लेखक परिचय – जैनेन्द्र कुमार

1. **रचनाएं** :– परख, सुनीता, कल्याणी, त्यागपत्र, सुखदा, विवर्त, अनाम स्वामी मुक्तिबोध, एकरात, वातायन, दो चिड़िया, पाजेब, नीलम देश की राजकन्या, फांसी, स्पर्द्धा आदि।
2. **भाषा शैली** :– जैनेन्द्र कुमार की भाषा सरल, सुबोध तथा स्पष्ट है। उसमें व्यवहारिक शब्दावली तथा उर्दू, अंग्रेजी आदि शब्दों का प्रयोग हुआ है। भाषा में संस्कृतनिष्ठ शब्दों की बहुलता है इन्होंने अपनी भाषा में मुहावरों एवं

लोकोक्तियों का सटीक प्रयोग किया है। अपने काव्य में शैली के अनेक नवीन रूप अपनाये हैं।

3. **साहित्य में स्थान** :– जैनेन्द्र कुमार ने हिन्दी को विषय तथा कला की दृष्टि से अनेक नवीनताएं प्रदान की है। आधुनिक कथाकारों में आपका सम्मान जनक स्थान है।

(2+2+1=5 अंक)

उत्तर 15. कवि परिचय – सूरदास

1. **रचनाएं** :– सूरसागर, सूरसारावली, साहित्य लहरी।
2. **भाव पक्ष** :– सूर साहित्य भक्ति, श्रृंगार और वात्सल्य की अनुपम संगम स्थली है। सूरदास कृष्ण भक्ति शाखा के प्रमुख कवि है। उन्होंने कृष्ण की बाल लीलाओं का अत्यंत मनोहारी एवं विस्तृत वर्णन किया है।
3. **कला पक्ष** :– सूरदास जी ब्रज भाषा के कुशल प्रयोक्ता माने गये है। गेय काव्य के अनुरूप ही उनकी भाषा में कोमलता, सरलता, सहजता और सरसता है। सूर ने मुक्तक पद शैली में रचना की है। उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा अलंकारों का बहुलता से प्रयोग सूरकाव्य में बहुतायत से देखने को मिलता है।
4. **साहित्य में स्थान** :– भक्ति काल में सगुण भक्ति शाखा के प्रवर्तक कवि सूरदास जी जहां गीतिकाव्य परम्परा के सशक्त गीतकार है तो वात्सल्य और श्रृंगार के अप्रतिम गायक। अपनी काव्य कला और साहित्यिक प्रतिभा के बल पर ही वे हिन्दी साहित्य जगत के सूर्य माने जाते है।

(2+1+1+1=5 अंक)

अथवा

कवि परिचय – सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'

1. **रचनाएं** :– राम की शक्ति पूजा, कुकुरमुत्ता, अनामिका, परिमल।

2. **भाव पक्ष :–** निराला का काव्य दार्शनिक विचार धारा, गंभीर चिन्तन और भाव सौन्दर्य की अमूल्य निधि है। उनके काव्य में कहीं विराट की ओर रहस्यात्मक संकेत है तो कहीं सामान्य जन के उत्पीड़न के चित्र है, कहीं कथा मुखर है तो कहीं गीत माधुरी।
3. **कला पक्ष :–** निरालाजी की भाषा शुद्ध साहित्यिक खड़ी बोली है। यह ओज, माधुर्य व प्रसाद गुणों से सुसज्जित है। हिन्दी कविता को छंद के बंधन से मुक्त कराने का श्रेय निराला जी को ही जाता है। चौपाई, दोहा, रोला आदि छंदों का भी आपने सफल प्रयोग किया है। उपमा, रूपक, मानवीकरण आदि अलंकारों की निराली छटा काव्य में देखते ही बनती है।
4. **साहित्य में स्थान :–** महाप्राण निराला छायावाद के आधार स्तंभ और आधुनिक काव्य में क्रांति के अग्रदूत के रूप में हिन्दी जगत में प्रतिष्ठित है। वे युगान्तकारी कवि और महामानव है।

(2+1+1+1=5 अंक)

उत्तर 16. गद्यांश की व्याख्या –

असल प्रकाश.....जा सकता।

संदर्भः– प्रस्तुत पंक्तियां ललित निबंध 'तिमिर गेह में किरण आचरण' से उद्धृत है। इसके लेखक डॉ श्याम सुन्दर दुबे है।

प्रसंगः– अंधकार का विलोम प्रकाश है ओर प्रकाश जीवन का दूसरा नाम है वास्तविक प्रकाश प्राणी के कर्म और आचारण में होता है।

व्याख्याः– लेखक प्रकाश यानि उजाले के वास्तविक रूप को बताते हुए कहता है कि प्रकाश बाहर की वस्तु न होकर जीवन में चरितार्थ होने वाली वस्तु है। सत्य व कर्म को अपनाकर नवीनता का निर्माण करना। यह कार्य वही कर सकता है जिसका आचरण शुद्ध हो, विचार अच्छे हों, प्राणी की विनम्रता, परिश्रम, अच्छे बुरे की पहचान कर अच्छाई के मार्ग पर चलना, दूसरे के दुखों, वेदनाओं, पीड़ाओं आदि को समझकर सहभागी बनने वाला व्यक्ति ही सृजन

कार्य कर सकता है। तिल जैसा बीज विकसित होकर पौधा बनता है तथा संसार को भोजन के रूप में जीवन देता है। यह पौधा मनुष्य को संदेश देता है कि विकास और निर्माण की गति, कभी नहीं रूकती है। विकास को कमरों या किसी अन्धकार में बन्द करके नहीं रखा जा सकता। विकास जल की वह धारा है जो निरंतर बहती रहती है।

विशेषः– 1. वास्तविक प्रकाश निर्माण तथा रचना है।

2. खड़ी बोली तत्सम तथा प्रादेशिक शब्दों का प्रयोग हुआ है।

3. उद्धरण शैली के द्वारा कथन का स्पष्टीकरण।

(संदर्भ–1, प्रसंग–1, व्याख्या–2, विशेष–1 कुल 5 अंक)

अथवा

गद्यांश की व्याख्या –

यह संसार.....पात्र हैं।

संदर्भः– प्रस्तुत पंक्तियां 'खेल' नामक पाठ से लिया गया है। जिसके लेखक सुप्रसिद्ध कहानीकार जैनेन्द्र कुमार है।

प्रसंगः– कहानी की नायिका सुरबाला रेत का भाड़ बनाती है। उसे मनोहर एक लात मारकर तोड़ देता है। पुरूष रूपी परमात्मा इस जगत को पल में विनष्ट कर देता है यह संसार इस सत्य को जानते हुए भी अनभिज्ञ बना रहता है।

व्याख्याः– गंगा के सूने तट पर बालक और बालिका दो पात्र है। बालिका भाड़ बनाती है, बालक उसे तोड़ देता है। रचना और विनाश के माध्यम से लेखक बताना चाहता है कि संसार क्षणभंगुर है परंतु मनुष्य इस सत्य को जानते हुए भी अनजान बने रहते हैं। बहते पानी में बुलबुला बनता है तथा देखने में सुन्दर होता है परंतु दूसरे ही पल नष्ट हो जाता है। इस प्रकार संसार के सुख भी पल में नष्ट होने वाले है। बुलबुले के समान संसार की सफलता नष्ट होने में ही है जो व्यक्ति इस सच्चाई को जान लेते है, वे जल में रहने वाले कमल के समान सौन्दर्य पूर्ण है।

विशेषः–

1. संसार को क्षणभंगुरता की ओर संकेत किया है।
2. संस्कृत के शब्दों से युक्त शुद्ध खड़ी बोली है।
3. वाक्य छोटे व अर्थपूर्ण है।

उत्तर 17. पद्यांश की संदर्भ प्रसंग सहित व्याख्या –

बाल्हा.....रहूंगी हो।

संदर्भः– प्रस्तुत पद्यांश 'मीरा के पद' से अवतरित है। इसकी रचयिता मीराबाई है।

प्रसंग :– भक्त कवयित्री मीरा ने अपने स्वामी श्रीकृष्ण को प्राप्त करने के लिए वैरागिण होने और शील, संतोष आदि गुणों को धारण करके अपनी अनन्य भक्ति का वर्णन किया है।

व्याख्या :– मीरा बाई कहती है कि हे स्वामी मैं वैरागिन होकर संसार को त्याग दूंगी और जिस भेष से मेरे स्वामी कृष्ण प्रसन्न होंगे वैसा ही वेष मैं धारण करूंगी। अपने ह्रदय में शील और संतोष धारण करके सब लोगों के साथ समान व्यवहार करूंगी। जिसका नाम निरंजन है उसी प्रभु का ध्यान मैं हमेशा अपने ह्रदय में धारण करूंगी मैं अपने शरीर रूपी वस्त्र को गुरू रूपी ज्ञान से रंगूंगी और मन रूपी मुद्रिका पहनूंगी। प्रभु के गुणों का वर्णन करूंगी और उन्हीं के चरणों में लिपट कर रहूंगी। अपने इस शरीर को वाद्य यंत्र बनाकर अपनी जिह्वा से राम नाम को रटती रहूंगी।

मीरा कहती है कि मेरे प्रभु गिरधर गोपाल है। मैं उन्हें प्रसन्न करने के लिए उनका गुणगान और साधु संतों के साथ रहकर अपना जीवन सफल बनाऊंगी।

विशेष :–

1. राजस्थानी मिश्रित ब्रजभाषा का प्रयोग।
2. शान्त रस।

3. अनुप्रास एवं रूपक अलंकार।

4. हास्य भाव की प्रधानता है।

(संदर्भ–1, प्रसंग–1, व्याख्या–2, विशेष–1 कुल 5 अंक)

अथवा

देश की.....आने न देना।

संदर्भः– प्रस्तुत पंक्तियां राष्ट्र के श्रृंगार नामक कविता से उद्धृत है। इसके रचयिता ओजस्वी कवि श्रीकृष्ण सरल हैं।

प्रसंगः– कवि ने देश के वीर नागरिकों और बलशाली युवाओं का आह्वान किया है कि वे अपने देश की रक्षा करें। अपने देश की स्वतंत्रता पर वे आंच न आने दें।

व्याख्याः– कवि भारत के देशवासियों को सम्बोधित करते हुए कह रहे हैं कि– हे मेरे राष्ट्र के श्रृंगार और उसकी अभिलाषाओं को पूर्ण करने वाले वीरों! तुम अपने देश की स्वतंत्रता पर आंच न आने देना। जिन शहीदों ने अपना बलिदान देकर इस स्वाधीनता रूपी बगीचें को हरा–भरा बनाया है। उन देश के प्रेमियों की याद तुम भुला न देना जिनके उत्सर्ग से हमें स्वाधीनता प्राप्त हुई है। इस स्वतंत्रता रूपी चमन की हर कली मस्त सुगन्ध और फूलों का रूप रंग शहीदों के रक्त से सींचा गया है। जिस प्रकार नींव का पत्थर स्वयं धरती के नीचे दफन होकर अपने ऊपर सुंदर महल को आकार और स्थायित्व देता है उसी प्रकार उन शहीदों ने अपने को देश की स्वतंत्रता के लिए बलिदान कर नींव का पत्थर बनाया है वे ही शहीद जो नींव के पत्थर बनें हैं, अपनी सौगन्ध देकर कह रहे है कि तुम अपने देश की स्वतंत्रता पर आंच न आने देना।

विशेषः–

1. वीर रस ओज गुण की प्रधानता।
2. रूपक अलंकार और प्रतीकों का सुंदर समावेश।
3. देश प्रेमियों को उत्सर्ग के लिए प्रेरित किया गया है।

(संदर्भ–1, प्रसंग–1, व्याख्या–2, विशेष–1 कुल 5 अंक)

उत्तर 18. अपठित गद्यांश के उत्तर –

उत्तर 1. शीर्षक – 'नारी की महत्ता'।

उत्तर 2. सारांश – नारी सृष्टी का मूल आधार है। उसके अभाव में संसार की प्रत्येक रचना अधूरी है। वह कोमल होते हुए भी कठोर है। उसके मन मानस में सूर्य के समान तेज है तथा सागर जैसी गंभीरता है। पुरूष एवं नारी के तालमेल के बिना गृहस्थी का रथ भली प्रकार संचालित नहीं हो सकता।

उत्तर 3. सृष्टि का आधार नारी को कहा गया है।

(1+3+1 कुल 5 अंक)

उत्तर 19. **<u>ध्वनि विस्तारक यंत्रों पर रोक लगाने हेतु आवेदन पत्र</u>**

प्रति,

जिलाधीश,
जिला जबलपुर (म.प्र.)

विषयः– ध्वनि विस्तारक यंत्रों पर प्रतिबंध लगाने हेतु।

महोदय

मैं आपका ध्यान आधारताल कॉलोनी जबलपुर में ध्वनि विस्तारक यंत्रों की तीव्र ध्वनि से उत्पन्न समस्या की ओर आकर्षित करना चाहता हूँ। इस समय माध्यमिक शिक्षा मण्डल की हाईस्कूल तथा हायर सेकेण्डरी की परीक्षाएं प्रारंभ होने को है।

अतः आपसे विनम्र प्रार्थना है कि छात्रों के भविष्य को ध्यान में रखते हुए परीक्षा अवधि में ध्वनि विस्तारक यंत्रों पर प्रतिबंध लगाने का कष्ट करें।

धन्यवाद।

भवदीय

दिनांक

राहुल शर्मा
एवं अन्य छात्रगण
शा.उ.मा.वि. आधारताल जबलपुर

संबोधन–1 अंक, विषय 1 अंक, विषयवस्तु 2 अंक, प्रेषक– 1 अंक कुल 5 अंक प्राप्त होंगे।

अथवा

प्रति,

सचिव,
माध्यमिक शिक्षा मण्डल मध्यप्रदेश
भोपाल (म.प्र.)

विषयः– अंकसूची की द्वितीय प्रति भेजने हेतु।

महोदय,

विनम्र निवेदन है कि मैंने कक्षा दसवीं की परीक्षा सन् 2009 में उत्तीर्ण की थी किन्तु मेरी अंकसूची खो गई है। कृपया मुझे अंकसूची की द्वितीय प्रति भेजने का कष्ट करें। इसके लिए निर्धारित शुल्क बैंक ड्राफ्ट क्र. 52051 आपके नाम भेज रहा हूँ।

मुझसे संबंधित जानकारी इस प्रकार है :–

1. नाम – अंकित दुबे
2. पिता का नाम – श्री सतीश दुबे
3. परीक्षा – कक्षा दसवीं (2009)
4. परीक्षा केन्द्र – शा.उ.मा.वि., बरगीनगर
5. परीक्षा केन्द्र क्र. – 711068
6. अनुक्रमांक – 2010178
7. नियमित/स्वाध्यायी– नियमित
8. पूरा पता – अंकित दुबे पिता श्री सतीश दुबे
   एच–108, बरगीनगर, जबपलुर (म.प्र.)
9. संलग्न– बैंक ड्राफ्ट।

आवेदक

दिनांक अंकित दुबे

संबोधन–1 अंक, विषय 1 अंक, विषयवस्तु 2 अंक, प्रेषक– 1 अंक कुल 5 अंक प्राप्त होंगे।

उत्तर 20. निबंध–

इंटरनेट–आज के जीवन की आवश्यकता

इन्टरनेट का बढ़ता प्रयोग, नई खुशियों का पैगाम लाये।
सुख, समृद्धि, वैभव देश को बुलन्दियों के शिखरों तक पहुचाये।।

प्रस्तावना :– कम्प्यूटर एक यांत्रिक मस्तिष्क का रूपात्मक योग है तथा इंटरनेट कम्प्यूटर का एक अंग है। समाज में आज कोई भी इससे अछूता नहीं है। आज छात्र इन्टरनेट का उपयोग कर वांछित जानकारी प्राप्त कर अपना ज्ञानवर्द्धन कर रहे हैं। आज इसकी उपयोगिता दिन–प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। आज देश के अनेक क्षेत्रों में जैसे– बैंक, उद्योग, शिक्षा, चिकित्सा एवं दूरसंचार के साधनों आदि में भी इसका प्रयोग कुशलता से किया जा रहा है।

इन्टरनेट का इतिहास :– इंटरनेट एवं आधुनिक कम्प्यूटर नेटवर्किंग टेक्नोलॉजी का प्रारंभ 1970 के दशक में हुआ। सन् 1969 में अमेरिका के रक्षा विभाग की संस्था ''डिफेन्स एडवांस्ड रिसर्च प्रोजेक्ट एजेंसी'' ने सबसे पहला वाईड एरिया नेटवर्क बनाया। जिसका नाम था–ARPANET. प्रारंभ में इसके द्वारा अमेरिका के रक्षा विभाग के विभिन्न कार्यालयों को जोड़ा गया बाद में विश्वविद्यालयों तथा NATO देशों को जोड़ा गया। आज हम जिस इन्टरनेट का उपयोग कर रहे है वह इसी का पूर्ण विकसित रूप है।

इंटरनेट क्या है?– जिसका उपयोग आज सर्वाधिक हो रहा है वास्तव में उसकी जानकारी होनी आवश्यक है। सरल शब्दों में कहा जाए तो इन्टरनेट संसार में फैले कम्प्यूटरों का नेटवर्क है जिसके माध्यम से संसार की प्रत्येक जानकारी को पलभर में प्राप्त किया जा सकता है। इंटरनेट न कोई साफ्टवेयर है न कोई प्रोग्राम वरन यह ऐसी युक्ति है जहां विभिन्न जानकारियां एक उपकरण के माध्यम से मिल जाती है। इसके माध्यम से मिलने वाली जानकारी में संसार के व्यक्तियों तथा संगठनों का सहयोग रहता है।

इंटरनेट का प्रयोग :– आज इंटरनेट का प्रयोग विभिन्न क्षेत्रों में हो रहा है। कुछ प्रमुख क्षेत्र इस प्रकार है :–

1. **शिक्षा के क्षेत्र में** :– शिक्षा के क्षेत्र में इंटरनेट के माध्यम से विभिन्न विषयों से सम्बद्ध जानकारी सहज ही प्राप्त की जा सकती है। विषय विशेषज्ञों की राय ली जा सकती है। परीक्षा परिणाम भी आज शीघ्र ही प्राप्त किये जा सकते है।
2. **मनोरंजन के क्षेत्र में** :– मनोरंजन के क्षेत्र में इंटरनेट के द्वारा क्रांतिकारी परिवर्तन आया है। इसके माध्यम से मनपंसद संगीत का आनंद ले सकते है। नई फिल्मों की जानकारी तथा संगीत के विभिन्न पक्षों की सूक्ष्म जानकारी तथा आनंद लिया जा सकता है। तनावभरे जीवन में इंटरनेट राहत का पल है।
3. **कला के क्षेत्र में** :– आज इंटरनेट के माध्यम से कलाकार बना जा सकता है। इसके लिए जन्मजात कलाकार होना आवश्यक नहीं है। इंटरनेट के द्वारा व्यक्ति स्क्रीन पर चित्र बनाता है और प्रिंटर के माध्यम से बिना रंग और तूलिका का प्रयोग किये बिना सुंदर रंगीन चित्र प्राप्त किया जा सकता है।
4. **पुस्तकों के क्षेत्र में** :– पुस्तकों तथा समाचार पत्रों के प्रकाशन में भी इंटरनेट का अपूर्व योगदान है। यदि समाचार पत्र समय पर न मिले तब भी पलक झपकते ही किसी भी समाचार पत्र को इंटरनेट पर पढ़ा जा सकता है। देश ही नहीं विश्व भर के साहित्यकारों की रचनाओं का आनंद इंटरनेट पर प्राप्त होता है। साहित्य में रूचि रखने वाले इंटरनेट के माध्यम से अपनी रचनाओं का प्रकाशन कर सकते है।
5. **वैज्ञानिक क्षेत्र में** :– विज्ञान भी इंटरनेट से जुड़ा हुआ है। अंतरिक्ष तथा अनेक वैज्ञानिक खोजों की सटीक तथा तथ्यपरक जानकारी इंटरनेट प्रदान करता है।

6. **चिकित्सा के क्षेत्र में** :– चिकित्सा संबंधी विभिन्न जानकारियां इंटरनेट से प्राप्त की जा रही है। चिकित्सा सुविधाओं से वंचित ग्रामीण क्षेत्रों में भी इंटरनेट के माध्यम से चिकित्सकों को सुविधा एवं मार्ग दर्शन दिया जा रहा है। आज आम इंसान भी विभिन्न रोगों और उपचार केन्द्रों की जानकारी इंटरनेट से प्राप्त कर लेता है।
7. **कृषि क्षेत्र में** :– भारत कृषि प्रधान देश है। आधुनिक युग का किसान इंटरनेट के माध्यम से कृषि की उन्नत तथा नयी तकनीकों की जानकारी प्राप्त कर रहा है। आज किसान घर बैठे ही उन्नत कृषि के गुर सीख रहे है।
8. **बैंकिंग के क्षेत्र में** :– भारतीय बैंकों में खातों के संचालन में इंटरनेट का उपयोग हो रहा है। आम व्यक्ति भी बैंक संबंधी विभिन्न कार्यों के लिए इंटरनेट का प्रयोग करके समय की बचत कर रहा है।

इन क्षेत्रों के अतिरिक्त डिजाइनिंग, संचार, संगीत आदि में भी इंटरनेट का प्रयोग हो रहा है।

इंटरनेट के लाभ :–

1. समय की बचत होती है।
2. एक स्थान पर बैठकर अनेक स्थानों से संबंधित जानकारी प्राप्त होती है।
3. तथ्यपरक जानकारी प्राप्त होती है।
4. इंटरनेट सरल तथा सुलभ माध्यम है जिससे हम अनेक क्षेत्रों की जानकारी प्राप्त करते है।

इंटरनेट से हानि :–

1. इंटरनेट पर अश्लील वेबसाइट के कारण समाज में नैतिकता का संकट उत्पन्न हो गया है।
2. इंटरनेट का अत्यधिक प्रयोग करने के कारण मनुष्य स्वविवेक एवं बुद्धि का प्रयोग कम कर रहा है।
3. इंटरनेट के अधिक उपयोग से स्वास्थ्य भी प्रभावित होता है।

उपसंहार :– इंटरनेट के अधिकाधिक प्रयोग ने सिद्ध कर दिया है कि यह नव चमत्कार के रूप में मान्य कर लिया गया है। किन्तु यह भी सर्वमान्य तथ्य है कि प्रत्येक वस्तु के श्वेत श्याम पक्ष होते है। सदुपयोग करने वालों के लिए जहां इंटरनेट अनूठी सुविधा की खान है वहीं इंटरनेट का दुरूपयोग करने वालों ने असुविधाओं के श्याम पक्ष को हमारे समक्ष प्रस्तुत किया है। अतः आज आवश्यकता इस बात की है कि हम इंटरनेट की उपयोगिता पहचानें तथा स्वयं अपनी, समाज की तथा देश की उन्नति के कारक बनें।

(नोटः– उपरोक्त रूपरेखा के अनुसार बिन्दुओं का विस्तार करते हुए लगभग 300 शब्दों में निबंध लिखा जाये।)

10 अंक

– – – – –